प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 26 * MAY 2009 *

SN	Title	Min	Coding	Contents	
1	May 01	52		भगवान का नाम -ओंकार- का स्वरूप निरूपण व्याकरण समीक्षा व नाम रूप संसार उत्पत्ति	I
2	May 02	*36*		ब्रह्म का स्वरूप लक्षण - सत्-चित-आनंद तटस्थ लक्षण - जगत का अध्यारोप-अपवाद	
3	May 03	53		ब्रह्मोपनिषद सृष्टि क्रम निरूपण ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या	1
4	May 04	*51*		भगवान के ज्ञान का साधन-त्रिकांडमय वेद, वर्णाश्रम व उनके धर्म ब्रह्म माया व सृष्टि क्रम	2
5	May 05	*33*		ब्रह्म का स्वरूप एवं सृष्टि क्रम निरूपण	3
6	May 06	*48*		भ० के ज्ञान का साधन त्रि० वेद, कारण के ज्ञान से कार्य का ज्ञान हो जाता है ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या Imp	4
7	May 07	*45*		ब्रह्म का स्वरूप एवं माया ईश्वर जीव तथा सृष्टि क्रम निरूपण अनादि के छः प्रकार	5
8	May 08	46		आत्मा सूर्य रूप व अध्यास रूपी निद्रा माया मेघ तथा स्व०-जा० जगत बरसात है पाँच भ्रम	6-a
9	May 09	53		अन्न०उ०-पाँच भ्रांतियाँ भेद भ्रा०, कर्ता-भोक्ता भ्रॉ० , संग भ्रॉ०, आत्मा में विकार भ्रॉ०, भिन्न भ्रॉ०	6-b
10	May 10	23		ब्रह्म जगत का विवर्तोपादान कारण जगत रज्जू में सर्प के समान भ्रम रूप कल्पना मात्र है Good	
11	May 11	33		गीता २ - श्रेय-नित्य एवं प्रेय-आभास सुख निरूपण	1
12	May 12	*44*		भ० के ज्ञान का साधन त्रि० वेद/मल विक्षेप आवरण की निवृत्ति ब्रह्म माया व सृष्टि क्रम	7
13	May 13	32		गीता २/२८, स० रहस्योपनिषद अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म है तथा जगत नाम रूप तरंगें हैं Imp	a
14	May 14	40		स० रहस्योपनिषद अस्ति भाति प्रिय : ब्रह्म है - जगत नाम रूप : तरंगें हैं Imp	b
15	May 15	*32*		गीता २/२८-२९ - दृष्टा ब्रह्म सत्य है व दृश्य जगत छाया मात्र यानि मिथ्या है	2
16	May 16	49		भगवान के ज्ञान का साधन-त्रिकांडमय वेद, निष्काम कर्म-उपासना-ज्ञान नवधा भक्ति	A
17	May 17	34		गीता २/२८-३० - दृष्टा ब्रह्म सत्य है व दृश्य जगत छाया मात्र यानि मिथ्या है	3
18	May 18	35		भगवान के ज्ञान का साधन-त्रिकांडमय वेद, निष्काम कर्म-उपासना-ज्ञान नवधा भक्ति	B*
19	May 19	*55*	Capsule	स्वरूप अज्ञान मुक्ति-बन्ध साभास बुद्धि को है जीव की ७ अवस्थाऐं V.V.Imp	
20	May 20	43		भगवान के ज्ञान का साधन-त्रि० वेद, त्रैगुण्य संसार एवं वर्णाश्रम ५ माताओं का वर्णन	8
21	May 21	56		चार कृपाओं का वर्णन अज्ञान की निवृत्ति का साधन-त्रि० वेद, भगवान का स्वरूप निरूपण	
22	May 22	43		ब्रह्म पुरुष दृष्टा सत् है व माया प्रकृति दृश्य जगत छाया मात्र असत् है	4
23	May 23	*46*		भगवान की प्रथम वाणी एवं नाम ओंकार का स्वरूप निरूपण व्याकरण व नाम-रूप संसार की उत्पत्ति	II
24	May 24	45		क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर रचना व साभास बुद्धि में अज्ञान	
25	May 25	*47*		क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ निरूपण ब्रह्म पुरुष दृष्टा सत् व माया प्रकृति दृश्य जगत छाया मात्र व असत् है	
26	May 26	35		भगवान का एक नाम शेष भी है चार प्रकार के भक्त	
27	May 27	*36*		क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ/छाया-पुरुष निरूपण आत्मा दर्पण जगत छाया चित्र व सुषुप्ति रील के समान है	
28	May 28	31		श्रेय-नित्य/आत्म सुख एवं प्रेय-आभास सुख निरूपण जगत देवालय व हम चेतन देव हैं	1
29	May 29	50		रस रूपी आनंदसिंधु ब्रह्म सत्य व इच्छा/माया रूपी पवन से उत्पन्न रास रूपी तरंगें असत् हैं	
30	May 30	33		श्रेय-नित्य सुख एवं प्रेय-आभास सुख निरूपण श्रवण मनन निधि० ज्ञान के अनिवार्य साधन	2
31	May 31	43		सीताराम जगत के माता-पिता हैं परमार्थतः चतुर्वर्णीय सृष्टि/जगत सीताराम से अभिन्न है	
32	May 32	27		गीता २/१६, सत् एवं असत् दो ही पदार्थ हैं सत्-चित-आनंद - ब्रह्म का स्वरूप निरूपण	